पाठ-10 (काव्य-खंड)

ललद्यद्

वाख

प्रश्नोत्तर

प्र०1-> 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उ०-> यह 'रस्सी' शब्द का प्रयोग मनुष्य की 'सांस' या 'प्राण' के लिए हुआ है, जिसके सहारे मनुष्य अपनी शरीर-रूपी नाव को खींच रहा है। यह सांस अथवा प्राण रूपी रस्सी बहुत कमजोर है, कब टूट जाए अर्थात कब इन्सान मृत्यु को प्राप्त हो जाए कोई भरोसा नहीं।

प्र०-2-> कवियत्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उ०-> कवियत्री इस संसार में आकर संसारिकता अर्थात लोभ, मोह, माया आदि में उलझ गयी और वह इस संसारिकता से मुक्त नहीं हो पाई। वह कोरी प्रभु भक्ति के सहारे भवसागर पार करना चाहती है। उसकी सासों की डोर जो इस शरीर-रूपी नाव को खींच रही है, अत्यंत कमजोर है, इसलिए उसके द्वारा मुक्ति के लिए जा रहे सभी प्रयास विफल होते जा रहे हैं।

प्र०-3-> कावयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उ०-> कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से तात्पर्य है ईश्वर से मिलन, इस भवसागर से मुक्ति पाकर अपने ईश्वर की शरण में जाना। वह परमात्मा की शरण को ही अपना वास्तविक घर मानती है और यही उसके घर जाने की चाह का अभिप्राय है।

प्र०-4-> भाव स्पष्ट कीजिए:-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

=> भाव-कवियात्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन सांसारिक विषयों में फंसकर गंवा दिया। उसने जीवन के अंतिम समय में अपने जीवन का लेखा-जोखा देखा तो उनके पास ईश्वर को देने के लिए सद्कर्म/पुण्य कार्य जैसा कुछ भी न था।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।

=> भाव-इन पंक्तियों में कवियत्री ने मनुष्य को सांसारिक भोग तथा त्याग के बीच का माध्यम मार्ग अपनाने की सलाह दी है कि विषय-वासनाओं के अधिकाधिक भोग से कुछ मिलनेवाला नहीं है तथा भोगों से विमुखता एवं त्याग की भावना से मन में अहंकार पैदा होगा, इसलिए मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। माध्यम म

का अभिप्राय है कि सीमित मात्रा में एवं जरूरत के हिसाब से संसाधनों का उपभोग किया जाए।

प्र०-5-> बंद -द्वार की सांकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उ०-> बंद द्वार की सांकल खोलने के लिए कवियत्री ने निम्नलिखित उपाय अपनाने का सुझाव दिया है:-

(i). मनुष्य को सभी प्राणियों को समान दृष्टि या समान भाव से देखना चाहिए। ऐसा करने से वह सारी दुनिया के लिए अपने हृदय के द्वार खोल सकता है।

(ii). प्रभु की सच्ची भक्ति करनी चाहिए। मनुष्य को अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने के अभ्यास करना चाहिए।

प्र०-6-> ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उ०-> उपर्युक्त भाव निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त हुआ है:-

:- आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई
माझी को दूँ, क्या उतराई?

प्र०-7-> 'ज्ञानी' से कवियत्री का क्या अभिप्राय है?

उ०-> ज्ञानी से कवियत्री का अभिप्राय एक ऐसे व्यक्ति से है जो हिंदु-मुसलमान दोनों में कोई अंतर न करे सरल भाषा में कहें तो ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक आधार पर इंसानो में भेदभाव न करता हो क्योंकि दोनों ही उसी एक प्रभु की रचना हैं। साथ ही वह व्यक्ति अपने आप को पहचानने या आत्म-ज्ञान रखनेवाला भी हो। कवियत्री ने ऐसे व्यक्ति को ही आत्मज्ञानी कहा है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera